MVS FOUNDATION

FREE NOTES

हिंदी (301)

CHAPTER WISE NOTES

क्र. सं.	मॉड्यूल का नाम	पाठ (केवल पब्लिक परीक्षा वाले)	अंक
1	गद्य (कहानियाँ)	पाठ-9 : चीफ़ की दावत पाठ-14 : कुटज पाठ-16 : रीढ़ की हड्डी पाठ-17 : अंडमान डायरी	20
2	पद्य खंड(कविता)	पाठ-2 सगुण भक्तिकाव्य : तुलसीदास, सूरदास और मीराँबाई पाठ-3 रीतिकाव्य : बिहारी और पद्माकर पाठ-7 साठोत्तरी कविता : सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और दुष्यंत कुमार.	15

घटक	विवरण	अंक
गद्य	**कुल पाठ- 4**	20
पद्य	**पाठ 3**	15
TMA असाइनमेंट	असाइनमेंट	20
कुल संभव स्कोर		**55 अंक**

विषय - सूची

1	सगुण भक्तिकाव्य (तुलसीदास, सूरदास, और मीराँबाई)
2	रीतिकाव्य : बिहारी और पद्माकर
3	साठोत्तरी कविता : सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और दुष्यंत कुमार
4	चीफ़ की दावत
5	कुटज
6	रीढ़ की हड्डी
7	अंडमान डायरी

2

सगुण भक्तिकाव्य (तुलसीदास सूरदास और मीराँबाई)

(क) तुलसीदास (भरत का भ्रातृप्रेम)

पद (कविता की पंक्तियाँ) :

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई।
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू।
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा॥
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही॥
सुनि मुनि बचन .... जितावहिं मोही॥

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्या कांड से ली गई हैं। यहाँ भरत जी चित्रकूट की सभा में श्री राम के प्रति अपना प्रेम और श्रद्धा व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या : चित्रकूट में राम जी ने भरत के श्रेष्ठ स्वभाव की बहुत प्रशंसा की। भरत के विनम्र और प्रेमपूर्ण व्यवहार को देखकर गुरु वशिष्ठ ने उन्हें संकेत दिया कि वे अपनी बात राम जी से कह सकते हैं। भरत इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब उन्हें अनुमति मिली, तो वे भावुक हो उठे। उनके शरीर में कंपन हुआ और आँखों में प्रेम के आँसू आ गए।

भरत ने अत्यंत विनम्रता से कहा कि जो कहना था, वह गुरु वशिष्ठ पहले ही कह चुके हैं। वे राम के स्वभाव को बचपन से जानते हैं। राम ने कभी किसी पर क्रोध नहीं किया और हमेशा भरत पर विशेष स्नेह रखा। खेल में भी वे भरत को कभी दुखी नहीं करते थे, बल्कि हारकर भी उन्हें जिता देते थे। भरत ने हमेशा राम का साथ निभाया और राम ने भी कभी उनका मन नहीं दुखाया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

भरत की बातों के दो अर्थ निकलते हैं। पहला, वे राम से कहना चाहते हैं कि बचपन से साथ रहने के कारण अब उनका वियोग सहना कठिन है। दूसरा, वे विश्वास व्यक्त करते हैं कि जैसे राम ने कभी उनका मन नहीं दुखाया, वैसे ही अब भी वे उनके आग्रह को स्वीकार कर अयोध्या लौट आएँगे।

विशेष (काव्य सौंदर्य) :

1. **अवधी भाषा** का प्रयोग किया गया है।
2. **नीरज नयन** में 'रूपक' और 'अनुप्रास' अलंकार है।
3. राम और भरत के बीच निस्वार्थ भ्रातृप्रेम (भाइयों का प्रेम) का चित्रण है।

पद (कविता की पंक्तियाँ) :

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा।

यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भा॥

मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।

फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली।।

सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।

बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।

हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा।

गुरु गोसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू।।

बिधिहूँ न सहि .... नीक परिनामू।।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्या कांड से ली गई हैं। यहाँ भरत जी चित्रकूट की सभा में अपने मन का दुख प्रकट कर रहे हैं और राम के वनवास के लिए स्वयं के भाग्य को दोषी मान रहे हैं।

व्याख्या : भरत अपने भाई राम के प्रति गहरे प्रेम को याद करते हुए कहते हैं कि शायद भगवान उनके प्रेम को सहन नहीं कर पाए, इसलिए माँ कैकेयी के माध्यम से उनके बीच दूरी आ गई। लेकिन ऐसा कहते ही उन्हें एहसास होता है कि माँ की निंदा करना गलत है। वे मानते हैं कि माँ को दोष देना उचित नहीं, क्योंकि इससे अहंकार झलकता है। भरत कहते हैं कि केवल खुद को अच्छा मान लेना पर्याप्त नहीं, बल्कि समाज भी उसे स्वीकार करे तभी उसका मूल्य होता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

भरत कहते हैं कि केवल खुद को अच्छा मान लेने से कुछ नहीं होता, जब तक लोग भी उसे न मानें। वे उदाहरण देते हैं कि जैसे बबूल के पेड़ पर आम नहीं लग सकते, वैसे ही यदि माँ में दोष है तो पुत्र भी पूरी तरह निर्दोष नहीं हो सकता। इसलिए वे किसी को दोष देने के बजाय अपने भाग्य को ही कारण मानते हैं। उनके अनुसार, राम का वनवास उनके दुर्भाग्य का ही परिणाम है।

वे मानते हैं कि कैकेयी द्वारा राम को वनवास दिलाना भी उनके ही बुरे भाग्य का परिणाम है। अंत में भरत अपनी गलती स्वीकार करते हैं कि उन्होंने बिना सोचे माँ को बुरा कहा। फिर वे आशा रखते हैं कि गुरु वशिष्ठ, राम और सीता जैसे महान लोगों के मार्गदर्शन से अंततः सब कुछ अच्छा ही होगा।

विशेष (काव्य सौंदर्य) :

1. साहित्यिक अवधी भाषा का अत्यंत मार्मिक प्रयोग है।
2. यहाँ भरत की आत्मग्लानि और राम के प्रति उनके अगाध समर्पण को दिखाया गया है। वे अपनी माता को दोष देने के बजाय अपने भाग्य को दोष दे रहे हैं।
3. करुण रस का प्रयोग किया गया है।
4. कई स्थानों पर अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है- मातु मंदि, समुझि साधु सुचि, जारहिं जायँ जननि, गुरु गोसाँइ, साहिब सिय आदि।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1 : भरत ने श्री राम के स्वभाव की क्या विशेषताएँ बताई हैं?

उत्तर: भरत के अनुसार श्री राम अत्यंत दयालु और प्रेम करने वाले हैं। वे अपने भक्तों और भाइयों पर कभी क्रोध नहीं करते। राम का स्वभाव इतना कोमल है कि उन्होंने अपराधी पर भी कभी गुस्सा नहीं किया। भरत बताते हैं कि राम ने बचपन से ही उनका साथ निभाया है और उनके मन को कभी ठेस नहीं पहुँचाई।

प्रश्न 2 : 'हरत खेल जितावहिं मोही' पंक्ति के माध्यम से भरत क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि श्री राम खेल में भी भरत को दुखी नहीं देख सकते थे। भरत का मन रखने और उन्हें खुशी देने के लिए राम जान-बूझकर खेल में खुद हार जाते थे और भरत को जिता देते थे। यह राम के निस्वार्थ प्रेम और बड़े भाई के त्याग को दर्शाता है।

प्रश्न 3 : तुलसीदास ने राम और भरत के संबंधों में किस मानवीय मूल्य को उभारा है?

उत्तर: तुलसीदास ने इसके माध्यम से भाईचारे, त्याग, और निस्वार्थ प्रेम जैसे मानवीय मूल्यों को उभारा है। जहाँ एक ओर राम भाई के लिए राज्य छोड़ देते हैं, वहीं दूसरी ओर भरत उस राज्य को स्वीकार न करके राम को वापस लाने वन जाते हैं। यह पद पारिवारिक एकता और बड़ों के प्रति सम्मान का संदेश देता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 4 : भरत स्वयं को राम के वनवास का कारण क्यों मानते हैं?

उत्तर: भरत को लगता है कि उनकी माता कैकेयी ने उन्हें राजा बनाने के लिए ही राम को वनवास भेजने का वरदान माँगा था। यद्यपि इसमें भरत की कोई गलती नहीं थी, फिर भी वे अपनी माता के इस कृत्य के लिए स्वयं को दोषी मानते हैं और आत्मग्लानी (पछतावे) से भरे हुए हैं।

(ख) सूरदास (पद)

पद :

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिए।।
कठुला-कंठ वज्र केहरि-नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।।

सोभित कर नवनीत .... सत कल्प जिए।।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के पद से संकलित है। जिसमें बालकृष्ण के अनुपम सौंदर्य का मार्मिक एवं चित्रात्मक वर्णन किया है। सूर के इस बाल-वर्णन में स्वाभाविकता, सरलता और मनोरमता का अद्भुत संयोग है।

व्याख्या : सूरदासजी कहते हैं कि श्रीकृष्ण बहुत छोटे हैं और नंद-यशोदा के आँगन में घुटनों के बल चलते हैं। उनके एक हाथ में ताज़ा माखन है, जिसे पकड़कर वे इधर-उधर घूमते रहते हैं। उनका नन्हा शरीर धूल से सना हुआ है, लेकिन यह धूल भी उनके रूप को और सुंदर बना रही है। उनके मुँह पर दही लगा है, मानो उन्होंने दही का लेप कर लिया हो। उनके गाल बहुत प्यारे हैं और आँखें चंचल हैं। माथे पर गोरोचन का तिलक लगा है। उनके बाल घुँघराले हैं और चलते समय बालों की लटें उनके गालों पर झूलती रहती हैं। ऐसा लगता है जैसे मधुमक्खियाँ मीठा रस पीकर मस्ती में झूम रही हों। गले में पहनी हुई कठुली और सिंहनख उनके बालरूप की सुंदरता को और बढ़ा देते हैं। सूरदास कहते हैं कि यदि श्रीकृष्ण के इस बालरूप के दर्शन एक पल के लिए भी हो जाएँ, तो जीवन सफल हो जाता है। इसके बिना लंबे समय तक जीना भी व्यर्थ है।

विशेष -

- कवि ने अनुप्रास और उत्प्रेक्षा अलंकारों की अनुपम छटा बिखेरी है।
- 'कपोल लोल लोचन', 'मंडित मुख', 'मनु मत्त मधुप' में अनुप्रास और 'लट लटकनि मनु .... मधुहिं पिए' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
- प्रत्येक पंक्ति में नाद-सौंदर्य भी है। ब्रजभाषा का सौंदर्य अनुपम है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: सूरदास ने कृष्ण के मुख पर दही के लेप और धूल का वर्णन क्यों किया है?

उत्तर - सूरदास ने कृष्ण की स्वाभाविकता दिखाने के लिए ऐसा वर्णन किया है। छोटे बच्चे अक्सर माखन खाते समय उसे मुँह पर लगा लेते हैं और जमीन पर खेलते समय धूल से सन जाते हैं। यह दृश्य कृष्ण की दिव्यता के साथ उनकी मासूमियत और चंचलता को बढ़ा देता है।

प्रश्न 2: 'लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस पंक्ति में कृष्ण के गालों पर झूलती बालों की लटों की तुलना मदहोश भँवरों से की गई है। जैसे भँवरा रस पीकर अलसा जाता है, वैसे ही कृष्ण की काली लटें उनके चेहरे की सुंदरता रूपी रस का पान कर रही हैं। यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' का प्रयोग सौंदर्य बढ़ाने के लिए किया गया है।

प्रश्न 3: सूरदास ने 'सौ कल्पों' के जीवन से कृष्ण के एक पल के दर्शन को बड़ा क्यों माना है?

उत्तर - सूरदास के अनुसार, बिना भक्ति और ईश्वर के दर्शन के जीवन व्यर्थ है। कृष्ण के इस बाल-रूप का एक पल का दर्शन जो आत्मिक शांति और आनंद देता है, वह हज़ारों वर्षों के साधारण जीवन में भी प्राप्त नहीं हो सकता। भक्ति की दृष्टि से ईश्वर का सानिध्य ही सर्वश्रेष्ठ है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(ग) मीराँबाई

पद

माई री म्हां लियाँ गोविन्दाँ मोल ।।टेक।।
थे कह्यां छाणे म्हां कां चोड़े, लियाँ बजन्ता ढोल।
थे कह्यां मुंहोधो म्हां कह्यां सस्तो, लिया री तराजां तोल।
तण वारां म्हां जीवण वारां, वारां अमोलक मोल।
मीराँ कूं प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जनम को कोल।।
माई री म्हां लियाँ .... जनम को कोल।।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ मीराँबाई के पद से संकलित है। यह पद में मीराँ ने कृष्ण के साथ अपने प्रेम-संबंध की घोषणा अत्यंत साहस और दृढ़ता से की है।

व्याख्या : मीराँ इस पद में अपनी सखी से अपने प्रेम की बात बहुत सरल और सच्चे भाव से कहती हैं। हे सखी! तुम कहती हो कि मैं उनसे यह संबंध छिपाकर रखती हूँ और मैं कहती हूँ कि मैंने खुले में ढोल बजा कर श्रीकृष्ण को मोल लिया है अर्थात् उन्हें खुले आम अपना लिया है। मीराँ आगे कहती हैं कि हे सखी, तुम कहती हो कि यह सौदा मँहगा है पर मेरा मानना है कि यह बहुत सस्ता है; क्योंकि मैंने यह सौदा तराजू पर तौलकर किया है अर्थात् मैंने पूर्ण रूप से सोच-विचार कर, जाँच-परख कर ही ऐसा किया है समाज के ताने, बदनामी और रिश्तेदारों की डाँट-फटकार मुझे बड़ी कीमत लग सकती है, लेकिन मेरे लिए श्रीकृष्ण को पाने का सुख इन सब से कहीं अधिक है। मीराँ ने अपना तन, मन और पूरा जीवन श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया है। उनके लिए यह प्रेम सबसे अनमोल है। अंत में वे श्रीकृष्ण से दर्शन देने की प्रार्थना करती हैं और कहती हैं कि यह प्रेम उनके पूर्व जन्म के वचन का परिणाम है।

विशेष -

- ब्रजभाषा, राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया गया है।
- मुहावरे का प्रयोग किया गया है।
- पद में गेयता है।
- पद में लयात्मकता है

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3

रीतिकाल (बिहारी और पद्माकर)

(क) बिहारी

कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।

तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जगन्नाथ-जगवाय।

कनक कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।

वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

कब को टेरत........................... या पाएँ बौराय।।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी के सुप्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ 'बिहारी सतसई से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में कवि ने अचानक धन प्राप्त होने वाले व्यक्ति के नशे का वर्णन किया है। कवि का कहना है कि यह नशा मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले नशे से सौ गुना अधिक बुरा होता है।

व्याख्या : कवि कहते हैं- "हे श्रीकृष्ण! मैं बहुत समय से दुखी होकर आपको पुकार रहा हूँ, लेकिन आप मेरी मदद नहीं कर रहे हैं। हे जगत के स्वामी! मुझे ऐसा लगता है कि आपको भी इस संसार की हवा (जगबाय) लग गई है। जिस तरह दुनिया के अमीर लोग अपनी मस्ती में चूर रहते हैं और गरीबों की पुकार नहीं सुनते, आप भी वैसे ही हो गए हैं। कवि आगे की दो पंक्तियों में कहते है कि सोने (धन) में धतूरे से सौ गुना ज्यादा नशा होता है। धतूरे को तो 'खाने' के बाद इंसान पागल (बौराय) होता है, लेकिन सोने (धन) को तो केवल 'पाने' मात्र से ही इंसान घमंड में पागल हो जाता है। धन का नशा इंसान के सिर पर हमेशा चढ़ा रहता है।

विशेष -

- कवि ने अपने इष्ट श्रीकृष्ण को द्रवित करने के लिए चतुराई भरे तर्कों का सहारा लिया है।
- कथन शैली शिकायत तथा व्यंग्यपूर्ण है।
- कवि ने सखा भाव की भक्ति द्वारा अपने इष्ट को रिझाया है।
- 'कनक कनक तैं सौगुनी' में यमक अलंकार कर प्रयोग किया गया है।

अथवा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।

सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय॥

प्रसंग : यह दोहा कवि बिहारी द्वारा रचित है। इसमें राधा जी द्वारा श्री कृष्ण की मुरली छिपाए जाने का बहुत ही मधुर और शरारत भरा वर्णन है।

व्याख्या : इस दोहे में कवि ने गोपियों और श्रीकृष्ण की हंसी-ठिठोली का बड़ा मनोहर चित्र प्रस्तुत किया है। गोपियाँ कृष्ण से बात करने के बहाने (अवसर) खोजती रहती हैं। इसी बहाने एक गोपी उनकी बाँसुरी छिपा देती है ताकि कृष्ण उनसे बातचीत करें। कृष्ण जब बाँसुरी की माँग करते हैं तो गोपियाँ उन्हें छेड़ते हुए झूठी कसम खाकर भौंहों से मुस्कुराते हुए इशारों में टाल देती है और बाँसुरी लौटाने से इनकार कर देती है। उसका असली उद्देश्य यही होता है कि बाँसुरी उसके पास रहे और वह कृष्ण से अधिक देर तक बातें करती रहे।

विशेष :

1. अलंकार का प्रयोग जैसे - 'लालच लाल'।
2. यहाँ नायक-नायिका के बीच की मधुर बातचीत और हंसी-मजाक का वर्णन है।
3. किसी का ध्यान खींचने के लिए उसकी प्रिय वस्तु छिपाने की मानवीय प्रकृति को यहाँ दिखाया गया है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: बिहारी ने कृष्ण के रूप की तुलना नीलमणि पर्वत से क्यों की है?

उत्तर - कृष्ण का रंग सांवला (नीलापन लिए हुए) है, इसलिए कवि ने उनके शरीर को नीलमणि पर्वत जैसा बताया है। जब वे पीले वस्त्र पहनते हैं, तो वह दृश्य वैसा ही लगता है जैसे नीले पर्वत पर सुबह की पीली धूप खिल रही हो। यह उपमा कृष्ण के तेज और सुंदरता को बढ़ाने के लिए दी गई है।

प्रश्न 2: 'कनक कनक ते सौ गुनी' दोहे का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर - इस दोहे का संदेश यह है कि धन का नशा किसी भी नशीली वस्तु से अधिक बुरा होता है। नशा करने के लिए चीज़ का सेवन करना पड़ता है, लेकिन बहुत अधिक धन आने पर व्यक्ति बिना कुछ किए ही अहंकारी हो जाता है और अपनी मर्यादा भूल जाता है।

प्रश्न 3: गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं ? कृष्ण द्वारा गोपियों से बाँसुरी माँगने पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है ? बिहारी द्वारा रचित पद के आधार पर लिखिए।

उत्तर - गोपियाँ श्रीकृष्ण से अत्यधिक प्रेम करती हैं और उनके साथ समय बिताने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ना चाहती। इसलिए, गोपियाँ उनकी बाँसुरी छिपा देती हैं ताकि कृष्ण उनसे लंबे समय तक बात कर सके। जब कृष्ण गोपियों से बाँसुरी माँगते

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

हैं, तो गोपियाँ भौंहों में मुस्कराकर उन्हें छेड़ती हैं और बाँसुरी वापस देने की बात कहकर फिर मुकर जाती हैं। गोपियाँ जान-बूझकर बाँसुरी नहीं लौटाती है।

(ख) पद्माकर

पद्यांश :

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,

दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।

धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,

अब तौ उपाय एक चित्त मैं चढ़ै नहीं।

कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,

कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।

एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।

कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

एकै संग धाए .... तो कढ़ै नहीं।

प्रसंग : प्रस्तुत कवित्त रीतिकाल के प्रमुख कवि पद्माकर के काव्य से लिया गया है। इसमें कवि ने फाग (होली) का सजीव और हृदयस्पर्शी चित्र प्रस्तुत किया है।

व्याख्या : इस कवित्त में गोपिका अपने प्रेम और व्यथा को बड़ी सजीवता से प्रस्तुत करती है। कवित्त का प्रसंग होली, यानी फाग, के उत्सव से जुड़ा है, जिसमें अबीर-गुलाल उछालना और खेलना मुख्य रिवाज़ है। कवित्त में बताया गया है कि उड़ता गुलाल गोपिका की आँख में चला गया है उसके साथ नंदलाल भी आँख में बस गए है अबीर तो धो-धोकर निकाला जा सकता है, लेकिन अहीर यानी कृष्ण का प्रेम दूर करना संभव नहीं है। गोपिका बार-बार आँखें धोकर भी सफलता नहीं पा रही है और वह बहुत अधीर, अकुल और विवश महसूस कर रही है। वह सोचती है कि इस व्यथा को किसे बताए, कौन सुने और किस तरह इसका समाधान निकले। इस कवित्त में अबीर के निकलने और अहीर के न निकलने के माध्यम से प्रेम की गहराई और गोपिका की व्यथा को चित्रित किया गया है।

विशेष :

1. भाषा ब्रज में सरल, भावपूर्ण और रसयुक्त है।
2. अनुप्रास अलंकार जैसे "धोय-धोय हारी" और यमक अलंकार जैसे "कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं" का प्रयोग भाव और ध्वनि को सुंदर बनाता है।
3. कवित्त में गोपिका की अधीरता, अकुलाहट और विवशता अत्यंत मार्मिक रूप से व्यक्त हुई है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1- 'पद्माकर' के छंद के आधार पर गोपी की विवशता का वर्णन कीजिए।

उत्तर - गोपिका की विवशता यह है कि होली खेलते हुए उसकी आँखों में अबीर और हृदय में कृष्ण बस गए हैं। वह सखी से कहती है कि बार-बार आँखें धोने पर भी गुलाल नहीं निकल रहा, जिससे उसे कष्ट हो रहा है। किसी तरह गुलाल तो निकल जाएगा, लेकिन हृदय में बसे कृष्ण को वह कैसे निकाले? वह वास्तव में उन्हें दूर करना भी नहीं चाहती।

प्रश्न 2 : 'धोय-धोय हारी' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - इस पंक्ति के माध्यम से गोपी की विवशता दिखाई गई है। वह अपनी आँखों में समाए कृष्ण के रूप के कारण व्याकुल है। वह बार-बार पानी से आँखें धोती है ताकि जलन कम हो या वह सामान्य हो सके, लेकिन कृष्ण का प्रेम इतना गहरा है कि कोई भी भौतिक उपाय काम नहीं कर रहा है।

प्रश्न 3 : इस पद में 'अबीर' और 'अहीर' शब्दों का क्या महत्व है?

उत्तर - कवि ने इन दोनों शब्दों का प्रयोग तुकबंदी और चमत्कार पैदा करने के लिए किया है। 'अबीर' बाहरी रंग का प्रतीक है जिसे धोया जा सकता है, जबकि 'अहीर' आंतरिक प्रेम और भक्ति का प्रतीक है जो एक बार मन में बस जाए तो कभी नहीं मिटता।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

7

साठोत्तरी कविता (सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और दुष्यंत कुमार)

(क) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (कविता 'भेड़िए')

भेड़िया गुर्राता है
तुम मशाल जलाओ।
उसमें और तुममें
यही बुनियादी फ़र्क है
भेड़िया मशाल नहीं जला सकता।
अब तुम मशाल उठा
भेड़िये के करीब जाओ
भेड़िया भागेगा।
करोड़ों हाथों में मशाल लेकर
एक-एक झाड़ी की ओर बढ़ो
सब भेड़िये भागेंगे।
फिर उन्हें जंगल के बाहर निकाल
बर्फ में छोड़ दो
भूखे भेड़िये आपस में गुर्राएँगे
एक-दूसरे को चीथ खाएँगे।
भेड़िये मर चुके होंगे
और तुम ?

कविता का सार

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना द्वारा रचित भेड़िए कविता आधुनिक समाज और राजनीति में व्याप्त क्रूरता, स्वार्थ और शोषण पर एक तीखा कटाक्ष है। कवि ने 'भेड़िए' को उन चालाक और ताकतवर शोषकों के प्रतीक के रूप में दिखाया है जो अपनी सत्ता और स्वार्थ को बनाए रखने के लिए मासूम और निहत्थे लोगों का शिकार करते हैं। कविता यह स्पष्ट करती है कि ये भेड़िए झुंड में आकर समाज में भय का माहौल पैदा करते हैं ताकि कोई उनके विरुद्ध आवाज़ न उठा सके। अंततः, यह कविता मानवीय संवेदनाओं के खत्म होने पर दुख जताती है और पाठकों को सचेत करती है कि यदि हम इन हिंसक और भ्रष्ट प्रवृत्तियों के खिलाफ एकजुट नहीं हुए, तो आम आदमी का अस्तित्व खतरे में बना रहेगा।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1 - 'भेड़िया' कविता में भेड़िया का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कविता में 'भेड़िया' शब्द का उपयोग एक प्रतीक के रूप में किया गया है। भेड़िया उस वर्ग का प्रतीक है जो अपनी हिंसा, क्रूरता और लालच से आम जनता को डराकर उनके अधिकारों को छीन लेता हैं। कविता का उद्देश्य सामान्य लोगों को भेड़िए जैसे हिंसक और अत्याचारी लोगों के खिलाफ संघर्ष करने का हौसला देना है।

प्रश्न 2 - 'भेड़िया' कविता हमें क्या संदेश देती है?

उत्तर - 'भेड़िया' कविता हमें यह संदेश देती है कि समाज में जो ताकतवर लोग (शोषक वर्ग) दूसरों पर अत्याचार करते हैं, उनसे डरने की ज़रूरत नहीं है। यदि हम संगठित होकर और जागरूक होकर उनका सामना करें, तो अत्याचारी को भगाया जा सकता है। कविता पाशविकता (पशुता) के विरुद्ध मानवीय एकजुटता का आह्वान करती है।

प्रश्न 3 -'भेड़िये भागेंगे' कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के इस विश्वास का क्या आधार है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के "भेड़िये भागेंगे" विश्वास का आधार यह है कि जब सामान्य जन संगठित होकर अत्याचार और भय के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं, तब सबसे क्रूर और अमानवीय सत्ता भी टिक नहीं पाती। भेड़िया यहाँ उन शक्तियों का प्रतीक है जिन्होंने सदियों से लोगों को डराकर शासन और सत्ता कायम रखी। किंतु कवि मानता है कि जब जनता विरोध की मशाल उठाकर सामने आएगी, तो ये सत्ता-प्रतीक भेड़िए भयभीत होकर भाग खड़े होंगे।

प्रश्न 4 - 'भेड़िए' कविता आज के समय में कितनी प्रासंगिक (जरूरी) है?

उत्तर - यह कविता आज के समय में पूरी तरह सटीक बैठती है। आज भी हम समाज और राजनीति में ऐसे लोग देखते हैं जो आम आदमी के अधिकारों का हनन करते हैं। यह कविता हमें सिखाती है कि यदि समाज को बचाना है, तो इन शोषक प्रवृत्तियों को पहचानना और उनका विरोध करना बहुत ज़रूरी है।

प्रश्न 5 - साठोत्तरी कविता की मुख्य विशेषता क्या है?

उत्तर - साठोत्तरी कविता (1960 के बाद की कविता) समाज की कड़वी सच्चाई, राजनीतिक भ्रष्टाचार, आम आदमी के मोहभंग और उसके संघर्ष को सीधे शब्दों में बयां करती है। इसमें कोई बनावटीपन नहीं होता।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(ख) दुष्यंत कुमार ('ग़ज़ल')

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

गज़ल का सार

इस गज़ल के माध्यम से कवि ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और अन्याय के विरुद्ध क्रांति का आह्वान किया है। वे कहते हैं कि जनता के दुख अब पर्वत की तरह भारी हो गए हैं, जिन्हें पिघलाकर बदलाव की 'गंगा' निकलनी चाहिए। कवि का मानना है कि केवल ऊपरी सुधारों से काम नहीं चलेगा, बल्कि भ्रष्ट व्यवस्था की बुनियाद को हिलाना होगा। वे चाहते हैं कि देश के हर गाँव और गली में लोग अपनी चुप्पी तोड़कर अन्याय के खिलाफ एकजुट हों। कवि स्पष्ट करते हैं कि उनका उद्देश्य केवल शोर मचाना नहीं, बल्कि समाज की बदहाल सूरत को बदलना है। अंत में वे कहते हैं कि बदलाव की यह तड़प और 'आग' चाहे किसी के भी मन में हो, वह जलती रहनी चाहिए ताकि व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: दुष्यंत कुमार के अनुसार आज़ादी के बाद के सपनों और हकीकत में क्या अंतर है?

उत्तर - कवि के अनुसार सपना हर घर को रोशन करने का था, लेकिन हकीकत में पूरे शहर के पास भी पर्याप्त साधन नहीं हैं। यह राजनेताओं के झूठे वादों और समाज में फैली हुई गरीबी और असमानता की ओर इशारा करता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 2: दुष्यंत कुमार ने 'पीर' को 'पर्वत' के समान क्यों कहा है?

उत्तर - दुष्यंत कुमार ने 'पीर' को 'पर्वत' इसलिए कहा है, क्योंकि समाज की पीड़ा बहुत बड़ी और गहरी हो चुकी है। ये समस्याएँ पर्वत की तरह विशाल दिखाई देती हैं। कवि मानता है कि इन्हीं कठिन समस्याओं से संघर्ष करके समाधान निकलेगा और समाज में नया परिवर्तन आएगा।

प्रश्न 3: दुष्यंत कुमार द्वारा रचित ग़ज़ल के संदर्भ में लिखिए कि कवि हंगामा क्यों खड़ा करना चाहता है?

उत्तर - कवि समाज की वर्तमान स्थिति से अंसतुष्ट है और वह इसे बदलना चाहता है। वे केवल शोर-शराबे के लिए हंगामा नहीं चाहते, बल्कि ऐसा जन-आंदोलन चाहते हैं जिससे समाज की वास्तविक तस्वीर बदले। उनका उद्देश्य दिखावा नहीं, बल्कि अन्याय समाप्त कर समानता, न्याय और मानवीय मूल्यों की स्थापना करना है।

प्रश्न 4: 'ग़ज़ल' के संदर्भ में 'लाश' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - 'ग़ज़ल' में 'लाश' से तात्पर्य उस शोषित और उपेक्षित समाज से है जो भीतर से टूट चुका है। उनके शरीर में जीवन है, परंतु वे हक के लिए संघर्ष नहीं करते। गरीबी, अपमान और अन्याय को वे अपनी किस्मत मान चुके हैं। कवि ऐसे निष्क्रिय लोगों को जागरूक होकर अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने की प्रेरणा देता है।

प्रश्न 5: ग़ज़ल के माध्यम से कवि किस प्रकार का परिवर्तन चाहता है? प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - कवि दुष्यंत कुमार ग़ज़ल के माध्यम से समाज और राजनीतिक व्यवस्था में एक बुनियादी और क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते हैं। वे मात्र सतही सुधारों या दिखावे के पक्ष में नहीं हैं, बल्कि उनका लक्ष्य एक ऐसी सामाजिक क्रांति लाना है जहाँ आम आदमी के अधिकारों की रक्षा हो और भ्रष्टाचार का अंत हो। कवि चाहते हैं कि समाज में अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठे और लोगों के भीतर सोई हुई मानवीय संवेदनाएँ जागृत हों, ताकि एक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज का निर्माण हो सके।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

9

'चीफ़ की दावत

'चीफ़ की दावत' का सार :

मुख्य पात्र : श्यामनाथ, श्यामनाथ की पत्नी, माँ और चीफ़।

इस कहानी के लेखक भीष्म साहनी है यह कहानी **मिस्टर शामनाथ** के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने दफ्तर के **चीफ़ (साहब)** को खुश करने के लिए अपने घर पर दावत देते हैं। शामनाथ और उनकी पत्नी घर को सजाने और साहब की पसंद का खाना बनाने में जी-जान लगा देते हैं, ताकि शामनाथ को प्रमोशन मिल सके। उनकी इस दिखावे की दुनिया में सबसे बड़ी बाधा उनकी **बूढ़ी माँ** है। शामनाथ को लगता है कि साहब के सामने माँ का होना उनके 'स्टेटस' को कम कर देगा। वे अपनी माँ को एक फालतू सामान की तरह छिपाने की कोशिश करते हैं। वे माँ को हिदायत देते हैं कि जब साहब आएँ, तो वह कोठरी में छिप जाएँ और यदि बाहर बैठना पड़े, तो सोएँ नहीं (ताकि उनके खर्राटे साहब को सुनाई न दें)।

दावत के दौरान, साहब अचानक माँ के सामने आ जाते हैं। शामनाथ बहुत घबरा जाते हैं, लेकिन स्थिति तब बदल जाती है जब चीफ़ माँ के सादे स्वभाव और उनके द्वारा बनाई गई **'फुलकारी'** (कढ़ाई का काम) में दिलचस्पी दिखाते हैं। शामनाथ अपनी माँ को 'नुमाइश' की वस्तु बनाकर साहब के सामने पेश करते हैं। साहब के जाने के बाद, शामनाथ माँ से लिपट जाते हैं, लेकिन प्रेम के कारण नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि साहब ने उनसे नई फुलकारी बनवाने का वादा लिया है, जिससे उनका प्रमोशन पक्का हो सकें। अंत में, माँ अपने बेटे की तरक्की की खातिर, अपनी ढलती उम्र और कमज़ोर आँखों के बावजूद फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो जाती है। यह माँ की ममता और बेटे के स्वार्थ के बीच के द्वंद्व को दिखाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1 : दावत के दौरान माँ का व्यवहार और चीफ़ की प्रतिक्रिया कैसी थी?

उत्तर - माँ बहुत डरी हुई और संकुचित थीं। जब चीफ़ ने उनसे हाथ मिलाना चाहा, तो वे घबरा गईं। लेकिन जब चीफ़ ने माँ की बनाई हुई पुरानी 'फुलकारी' देखी, तो वे बहुत खुश हुए। चीफ़ को माँ की सादगी और उनकी कला बहुत पसंद आई, जिससे माहौल खुशनुमा हो गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 2 : कहानी के अंत में श्यामनाथ के व्यवहार में क्या बदलाव आया?

उत्तर - शुरुआत में श्यामनाथ माँ को छिपाना चाहता था और उन पर गुस्सा कर रहा था। लेकिन जैसे ही उसे पता चला कि चीफ़ माँ से खुश हैं और माँ की फुलकारी से उसकी तरक्की हो सकती है, उसका व्यवहार तुरंत बदल गया। वह माँ से फुलकारी बनाने को कहता है। यह उसके स्वार्थी स्वभाव को दर्शाता है।

प्रश्न 3 : माँ अपने अपमान को भूलकर फुलकारी बनाने को क्यों तैयार हो गई?

उत्तर - माँ का हृदय ममता से भरा था। भले ही उनके बेटे ने उनका अपमान किया और उन्हें छिपाया, लेकिन जब उन्हें पता चला कि फुलकारी बनाने से उनके बेटे की नौकरी में तरक्की होगी, तो वे सब कुछ भूल गईं। एक माँ के लिए अपने बेटे की कामयाबी ही सबसे बड़ी खुशी होती है।

प्रश्न 4 : 'चीफ़ की दावत' कहानी क्या संदेश देती है?

उत्तर - 'चीफ़ की दावत' कहानी हमें संदेश देती है कि आधुनिक बनने की दौड़ में हमें अपने संस्कारों और माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए। यह मध्यमवर्ग की उस मानसिकता पर चोट करती है जहाँ रिश्तों से ज्यादा करियर और दिखावे को महत्व दिया जाता है।

प्रश्न 5 - 'चीफ की दावत' कहानी का प्रमुख पात्र आप किसे मानते हैं और क्यों?

उत्तर - 'चीफ की दावत' कहानी की प्रमुख पात्र शामनाथ की माँ है, क्योंकि पूरी कहानी उन्हीं के चारों ओर घूमती है। वे त्याग, ममता और सहनशीलता की प्रतीक हैं। बेटे की उन्नति के लिए उन्होंने सब कुछ सहा, फिर भी अपमानित हुईं। उनकी पीड़ा और बलिदान ही कहानी का केंद्र है।

प्रश्न 6 - 'चीफ़ की दावत' कहानी में शामनाथ पदोन्नति पाने की लालसा में चीफ़ को दावत पर आमंत्रित करता है। क्या इस प्रकार के कार्य वर्तमान समय में भी दिखाई देते हैं? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर - 'चीफ़ की दावत' में शामनाथ के द्वारा पदोन्नति पाने की लालसा में चीफ को दावत पर बुलाने जैसा व्यवहार आज के समय में भी अत्यधिक दिखाई देता है। वर्तमान में भी लोग अपने स्वार्थ और पेशेवर लक्ष्यों को पूरा करने के लिए दिखावा करते हैं, दिखावटी आधुनिकता अपनाते हैं और परिवार के वास्तविक मूल्यों को नजरअंदाज कर देते हैं, जैसा कि 'चीफ़ की दावत' कहानी में बताया गया है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

14
कुटज

कुटज पाठ का सार

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित '**कुटज**' एक प्रेरणादायक ललित निबंध है, जिसमें हिमालय की सूखी और पथरीली चट्टानों के बीच उगने वाले **'कुटज' के पेड़** के माध्यम से मनुष्य को जीवन जीने का सही ढंग सिखाया गया है। कुटज एक ऐसा पौधा है जो भीषण गर्मी, पानी के अभाव और कठोर परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता, बल्कि अपनी जड़ों को पत्थरों के अंदर तक ले जाकर पाताल से जीवन-रस खींच लाता है और लहलहाते फूलों के साथ मुस्कुराता रहता है। लेखक बताते हैं कि कुटज '**अपराजित जीवन-शक्ति**' और '**स्वावलंबन**' का प्रतीक है, क्योंकि वह अपनी जरूरतों के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता और न ही किसी की चापलूसी करता है। वह अपनी मस्ती में जीता है और हमें यह संदेश देता है कि जीना भी एक कला है; जो व्यक्ति कठिन समय में भी धैर्य नहीं खोता और अपने मन पर नियंत्रण रखता है, वही वास्तव में '**मनस्वी**' है। संक्षेप में, यह पाठ हमें सिखाता है कि सफलता बाहरी सुख-सुविधाओं में नहीं, बल्कि भीतर की दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्म-सम्मान के साथ जीने में है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: कुटज को 'अपराजित योद्धा' क्यों कहा गया है?

उत्तर - कुटज को अपराजित योद्धा इसलिए कहा गया है क्योंकि वह हिमालय की उन ऊंचाइयों पर पनपता है जहाँ जीवन जीना लगभग असंभव है। भीषण गर्मी और चट्टानी जमीन के बावजूद वह हार नहीं मानता। वह अपनी जड़ों से पत्थरों को चीरकर पानी निकालता है और विपरीत परिस्थितियों में भी हरा-भरा रहकर अपनी जीवटता और संघर्षशीलता का प्रमाण देता है।

प्रश्न 2: 'जीना भी एक कला है'- कुटज के संदर्भ में लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर - लेखक के अनुसार जीना केवल सांस लेना नहीं, बल्कि हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना है। कुटज बिना किसी बाहरी सहायता या सुख-सुविधा के, केवल अपने आंतरिक संतोष और शक्ति के बल पर आनंदपूर्वक जीता है। वह हमें सिखाता है कि यदि मनुष्य अपने मन पर अधिकार कर ले और स्वार्थ को त्याग दे, तो वह किसी भी हाल में खुश रहने की कला सीख सकता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 3: 'कुटज' पाठ के आधार पर लिखिए कि कुटज के फूल को 'बड़भागी' क्यों कहा है?

उत्तर - 'कुटज' पाठ में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कुटज के फूल को 'बड़भागी' इसलिए कहा है क्योंकि कुटज को हिमालय की कठोर और विषम परिस्थितियों में भी खिलते देखा जा सकता है। जहां अन्य फूल नहीं उग पाते, वहां कुटज अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है, जो उसके बड़भागी होने का प्रमाण है। यह विषम परिस्थितियों में भी खिलता है और लोगों को सहारा देता है। कालिदास जैसे महान कवि ने भी इसकी प्रशंसा की है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी इसके साथ थे।

प्रश्न 4: लेखक के अनुसार कुटज हमें 'स्वार्थ' से ऊपर उठने की प्रेरणा कैसे देता है?

उत्तर - लेखक कहते हैं कि कुटज केवल अपने लिए नहीं जीता, बल्कि वह अपनी हरियाली और फूलों से दूसरों को प्रसन्नता देता है। वह हमें सिखाता है कि केवल अपने लिए जीना ही जीवन नहीं है। असली सुख 'परमार्थ' (दूसरों की भलाई) में है। जो व्यक्ति अपने मन को वश में करके दूसरों के हित के लिए जीता है, वही वास्तव में महान है।

प्रश्न 5: निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

ये जो ठिगने-से लेकिन शानदार दरख्त गर्मी की भयंकर मार खा-खाकर और भूख-प्यास की निरंतर चोट सह-सहकर भी जी रहे हैं, इन्हें क्या कहूँ? सिर्फ जी ही नहीं रहे हैं, हँस भी रहे हैं। बेहया हैं क्या? या मस्तमौला है? कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़े काफी गहरे पैठी रहती हैं। ये पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते हैं।

उत्तर -

ये जो ठिगने-से .... खींच लाते हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध 'कुटज' से अवतरित है। इसमें लेखक कुटज के स्वरूप, मस्तमौलापन एवं उसकी सहनशीलता को दर्शाता है।

व्याख्या : लेखक बताता है कि शिवालिक पर्वत श्रृंखला सूखी और नीरस है। यहाँ पानी का अभाव रहता है। फिर भी यहाँ जो ठिगने से कुटज के वृक्ष शान से खड़े और जीते हुए दिखाई देते हैं। ये कुटज के वृक्ष भयंकर गर्मी की मार झेलते रहते हैं। ये भूख प्यास की चोट को भी सहते हैं। यहाँ इन्हें भोजन तक प्राप्त नहीं होता। फिर भी जीते हैं। इनकी जीने की प्रशंसा करनी पड़ेगी। ये केवल जीते हीं नहीं, हँसते भी रहते हैं। इन्हें बेहया (बेशर्म) भी नहीं कहा जा सकता। ये तो मस्तमौला हैं। कुछ लोग ऊपर से बेशर्म प्रतीत होते हैं, पर उनकी जड़ें गहरी होती हैं। कुटज के वृक्षों की जड़ें भी गहराई तक गई होती हैं। ये तो पत्थरों की छाती को चीरकर भी अपना भोजन खींच निकाल लेते हैं। गहरी खाई से भी अपना भोग्य खींच लेते हैं। इससे उनकी जीने की इच्छा का पता चलता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

विशेष-

1. कुटज की जीने की इच्छा का वर्णन हुआ है।
2. रोचक शैली का अनुसरण किया गया है।
3. कुटज के मस्तमौला स्वभाव का वर्णन किया गया है।
4. वर्णनात्मक शैली अपनाई गई है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

16

'रीढ़ की हड्डी'

'रीढ़ की हड्डी' का सार

'रीढ़ की हड्डी' जगदीश चंद्र माथुर द्वारा लिखित एक उद्देश्यपूर्ण नाटक है, जो नारी शिक्षा और उसके आत्मसम्मान के महत्व को रेखांकित करता है। कहानी उमा नाम की एक शिक्षित लड़की के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे देखने के लिए गोपाल प्रसाद और उनका बेटा शंकर आते हैं। उमा के पिता रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा को छिपाते हैं क्योंकि गोपाल प्रसाद को कम पढ़ी-लिखी बहू चाहिए जो केवल घर का काम संभाल सके। गोपाल प्रसाद उमा से अजीबोगरीब सवाल पूछते हैं और उसे एक वस्तु की तरह परखते हैं। अंत में उमा चुप रहने के बजाय अपने साहस का परिचय देती है और शंकर की पोल खोल देती है कि वह कॉलेज में लड़कियों के हॉस्टल के चक्कर काटते हुए पकड़ा गया था और उसकी अपनी कोई 'रीढ़ की हड्डी' (व्यक्तित्व या स्वाभिमान) नहीं है। यह नाटक सिद्ध करता है कि शिक्षा लड़कियों को साहस और गरिमा प्रदान करती है और विवाह कोई व्यापार नहीं बल्कि दो व्यक्तित्वों का मिलन है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: गोपाल प्रसाद लड़कियों की शिक्षा के विरोधी क्यों थे?

उत्तर - गोपाल प्रसाद एक संकुचित और रूढ़िवादी मानसिकता वाले व्यक्ति थे। उनका मानना था कि उच्च शिक्षा केवल पुरुषों के लिए है और लड़कियों का काम केवल घर संभालना और बच्चे पालना है। उन्हें डर था कि यदि बहू अधिक शिक्षित होगी, तो वह उनके इशारों पर नहीं नाचेगी और तर्क-वितर्क करेगी, जिससे घर का अनुशासन बिगड़ जाएगा।

प्रश्न 2: इस एकांकी का शीर्षक 'रीढ़ की हड्डी' क्यों रखा गया है?

उत्तर - 'रीढ़ की हड्डी' व्यक्ति के आत्मविश्वास और चरित्र का प्रतीक है। नाटक में शंकर का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है, वह अपने पिता के इशारों पर चलता है और उसका चरित्र भी खराब है। दूसरी ओर, उमा का स्वाभिमान उसकी रीढ़ की हड्डी है। यह शीर्षक समाज के उन पुरुषों पर कटाक्ष करता है जिनका अपना कोई मजबूत चरित्र या स्टैंड नहीं होता।

प्रश्न 3: उमा ने गोपाल प्रसाद को कैसे चुप करा दिया?

उत्तर - जब गोपाल प्रसाद उमा के साथ एक बेजान वस्तु जैसा व्यवहार करने लगे और उसकी शिक्षा पर सवाल उठाए, तो उमा ने निडर होकर जवाब दिया। उसने गोपाल प्रसाद से कहा कि क्या मेज़-कुर्सी की तरह लड़कियों का कोई मान-सम्मान नहीं होता?

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उसने शंकर की पोल खोलते हुए बताया कि वह पिछली रात लड़कियों के हॉस्टल के आसपास ताक-झाँक करते हुए पकड़ा गया था। उमा के इस साहसी तर्क ने गोपाल प्रसाद को निरुत्तर कर दिया।

प्रश्न 4: रामस्वरूप ने उमा की शिक्षा की बात क्यों छिपाई?

उत्तर - रामस्वरूप एक मजबूर पिता थे जो अपनी बेटी का हाथ एक अच्छे परिवार में देना चाहते थे। जब उन्हें पता चला कि लड़के वाले (गोपाल प्रसाद) अधिक पढ़ी-लिखी बहू नहीं चाहते, तो उन्होंने सामाजिक दबाव में आकर अपनी बेटी की बीए (B.A.) की डिग्री छिपाई। यह उनकी विवशता और समाज की संकुचित सोच को दर्शाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

17

'अंडमान डायरी'

अंडमान डायरी पाठ का सार

अंडमान डायरी पाठ एक **यात्रा-वृत्तांत** है जिसमें लेखक श्रीकांत वर्मा ने अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की अपनी यात्रा के अनुभवों को कलमबद्ध किया है। लेखक यहाँ के समुद्री सौंदर्य और प्राकृतिक दृश्यों से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य **सेल्यूलर जेल** की यात्रा करना है। वे इस जेल को 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम का तीर्थ' कहते हैं। लेखक बताते हैं कि कैसे उस समय की ब्रिटिश सरकार ने क्रांतिकारियों को समाज से पूरी तरह अलग करने के लिए उन्हें इस 'काले पानी' की सजा दी थी। पाठ में वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों, आदिवासियों के जीवन और वीर सावरकर जैसे महान सेनानियों के संघर्ष का सजीव चित्रण किया गया है। अंततः, यह पाठ पाठक के मन में देशभक्ति और शहीदों के प्रति सम्मान का भाव जगाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: लेखक ने सेल्यूलर जेल को 'तीर्थ' क्यों माना है?

उत्तर - लेखक ने सेल्यूलर जेल को तीर्थ इसलिए माना है क्योंकि यहाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अनगिनत वीर सेनानियों ने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए और अमानवीय कष्ट सहे। यह स्थान उनकी तपस्या और बलिदान की पवित्र भूमि है। हर भारतीय के लिए यह जेल राष्ट्रीय गौरव और श्रद्धा का केंद्र है।

प्रश्न 2: सेल्यूलर जेल में कैदियों को किस प्रकार की यातनाएँ दी जाती थीं?

उत्तर - काला पानी की इस जेल में कैदियों को एकांत कोठरियों में रखा जाता था जहाँ वे किसी से बात नहीं कर सकते थे। उनसे कोल्हू से तेल निकलवाया जाता था, पत्थर तुड़वाए जाते थे और बात-बात पर बेतों से पीटा जाता था। उन्हें भरपेट भोजन भी नहीं मिलता था। यह सब उनके मनोबल को तोड़ने के लिए किया जाता था।

प्रश्न 3: अंडमान डायरी पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर - अंडमान डायरी पाठ हमें प्रेरणा देता है कि हमें अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि इसे पाने के लिए हमारे पूर्वजों ने बड़े बलिदान दिए हैं। साथ ही, यह हमें प्रकृति के प्रति प्रेम और गौरवशाली इतिहास को सहेजने की सीख भी देता है। यह हमें देशप्रेम और राष्ट्रीय एकता के प्रति जागरूक करता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 4: निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

शेक्सपियर के नाटकों में ट्रेजेडी ट्रेजेडी रहती है, कॉमेडी कॉमेडी। मगर वे शेक्सपियर को घर भूल आए थे। यहाँ आकर उन्होंने सीखा था, ट्रेजेडी को कॉमेडी में और कॉमेडी को ट्रेजेडी में बदलना। तभी तो वे फाँसी की सुबह तमाम कोठरियों के द्वार खोल देते थे, ताकि बाहरी सींखचो से कैदी देख सकें अपना भविष्य-फाँसी, आज़ादी की माँग करनेवालों का भविष्य-फाँसी।

उत्तर -

शेक्सपियर के नाटकों .... का भविष्य-फाँसी।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश "श्रीकांत वर्मा" द्वारा लिखित "अंडमान डायरी" से लिया गया है। प्रस्तुत गद्यांश में लेखक 'सेल्यूलर जेल' के फाँसीघर के माहौल का चित्रण कर रहे हैं।

व्याख्या : लेखक कहते हैं कि अंग्रेज अपनी सभ्यता और शेक्सपियर के साहित्य पर गर्व करते थे, लेकिन भारत में उनका आचरण पूरी तरह अमानवीय था। शेक्सपियर के नाटकों में जहाँ दुख (ट्रेजेडी) और सुख (कॉमेडी) अलग-अलग होते हैं, वहीं अंग्रेजों ने भारत में इन दोनों का अंतर ही मिटा दिया था। वे फांसी देने से पहले कैदियों को धार्मिक पुस्तकें पढ़ने जैसी 'मानवीय' रियायतें तो देते थे, लेकिन जब स्वतंत्रता सेनानी अपनी अंतिम इच्छा के रूप में 'आजादी' माँगते, तो उन्हें फांसी पर लटका दिया जाता था। उनके लिए भारतीयों की मौत एक 'तमाशा' या नाटक की तरह थी। वे कोठरियों के द्वार इसलिए खोलते थे ताकि दूसरे कैदी फांसी को अपना 'भविष्य' मानकर डर जाएँ।

विशेष -

1. लेखक ने इतिहास को देखते हुए पश्चिमी देशों के औपनिवेशिक रवैये को साफ़ तौर पर दिखाया है।
2. भारत की पहचान की खोज में गुमनाम शहीदों को सम्मान दिया है। उनकी भाषा भावनाओं से भरी हुई है, जो कविता जैसी लगती है।
3. सरल और प्रवाहयुक्त भाषा का प्रयोग किया गया है।
4. अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे - ट्रेजेडी, कॉमेडी।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/